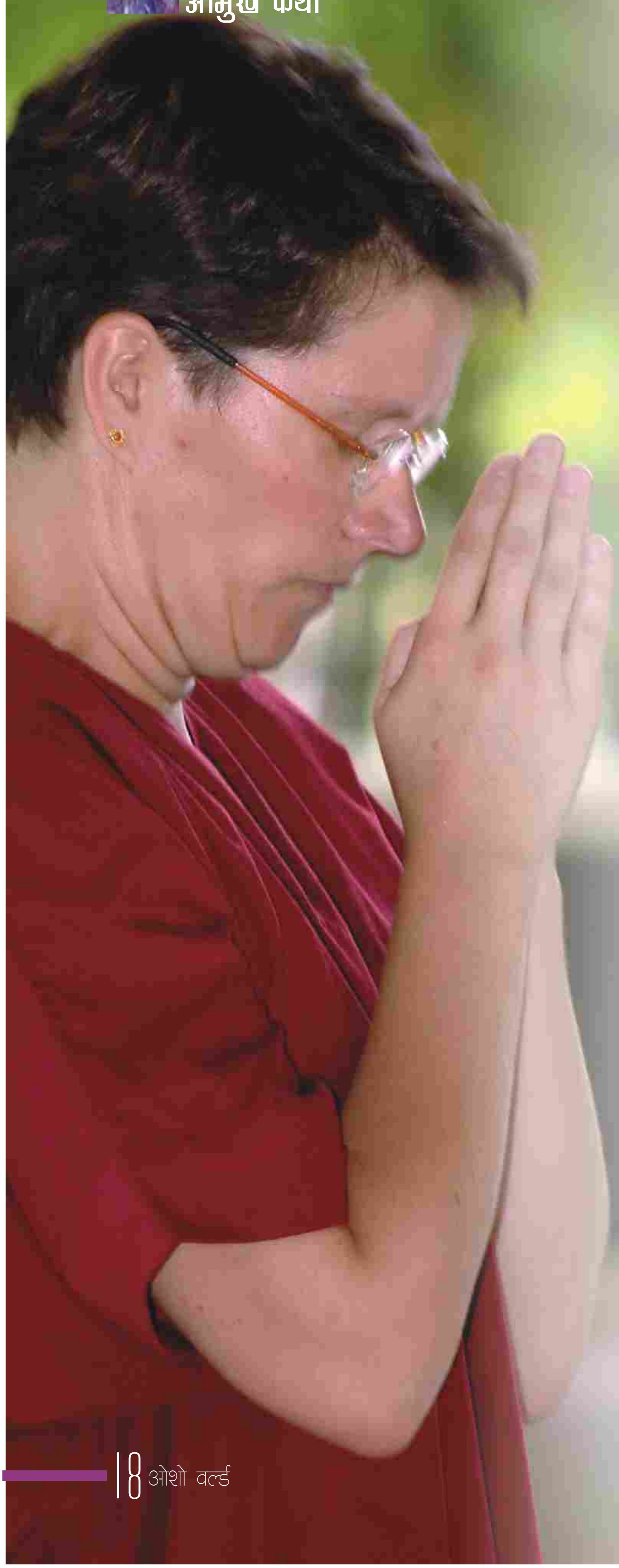

प्रार्थना है रहस्य का अनुभव

प्रश्न : प्रार्थना कैसे और कब जन्मती है?

रूपेश! प्रार्थना के उतने ही रूप, जितने प्रार्थना करने वाले लोग। प्रार्थना की कोई बंधी-बंधाई रूपरेखा नहीं है। जैसे चमेली के फूल चमेली के फूल और गुलाब के फूल गुलाब के फूल, और चंपा के फूल चंपा के फूल। रंग भी अलग, ढंग भी अलग, गंध भी अलग, रूप भी अलग, सौंदर्य अलग। लेकिन एक बात समान है कि सभी फूल हैं, सभी खिले, सभी ने अपना आनंद लुटाया।

प्रार्थना के भी अनंत फूल खिलते हैं। मीरा की प्रार्थना और चैतन्य की प्रार्थना में उतना ही फर्क है जितना चंपा और चमेली में। जीसस की प्रार्थना और मोहम्मद की प्रार्थना में उतना ही अंतर है जितना कमल और गुलाब में। लेकिन फिर भी प्रार्थना का सार तो एक है।

तो दो बातें समझनी होंगी। एक तो प्रार्थना का सार, उसका अंतर्गर्भ; और एक प्रार्थना की अभिव्यक्ति। एक तो प्रार्थना का केंद्र और दूसरी प्रार्थना की परिधि।

परिधि तो भिन्न-भिन्न होंगी। यह जगत बहुत वैविध्यपूर्ण है। और अच्छा है कि वैविध्यपूर्ण है, अन्यथा बड़ा उबाने वाला होता। यहां एक ही जैसे फूल होते, एक ही जैसे लोग होते, एक ही जैसे वृक्ष होते, तो आत्महत्या करने के अतिरिक्त और कुछ भी न सूझता। अच्छे होते तो भी। समझो कि सभी रामचंद्र जी! लिए धनुष-बाण, चले आ रहे हैं। बहुत घबड़ाहट हो जाती। सच तो यह है कि बिना रावण के रामलीला भी न बनती। घूमते रहते रामचंद्र जी धनुष-बाण लिए और सीता मैया को साथ लिए! जब तक रावण न मिले, रामलीला न बने। और कब तक घूमोगे मंच पर? जनता भी कहेगी, अब घर जाएं, अब पर्दा गिराओ!

यहां राम उतने ही आवश्यक हैं, जितना रावण। नहीं तो राम की कथा में रस ही न रह जाए। यहां तारे उतने ही जरूरी हैं, जितना अंधेरा आकाश। नहीं तो तारे चमकें ही न। पृष्ठभूमि चाहिए। यहां वैविध्य है, विरोध है। और दोनों ही महत्वपूर्ण हैं।

तो पहली तो बात : भिन्न-भिन्न प्रार्थनाएं हैं। प्रार्थना के रंग अलग, ढंग अलग। इससे यह मत समझना कि प्रार्थनाओं की आत्मा अलग-अलग है। आत्मा अलग-अलग नहीं है, सिर्फ देह; सिर्फ आवेष्टन, सिर्फ परिधान। आत्मा तो एक है।

प्रार्थना की आत्मा है समर्पण। मैं नहीं हूं, तू है, ऐसा भाव प्रार्थना का प्राण है। फिर यह भाव कैसे प्रकट होगा, यह व्यक्ति-व्यक्ति पर निर्भर होगा।

मीरा में नाच कर प्रकट होगा। मीरा नाच कर अपने को खो देगी। मैं नहीं हूं, तू है, इस बात की अभिव्यक्ति मीरा में नाच कर होगी। ऐसी नाचेगी, ऐसी नाचेगी, कि नर्तक खो जाए, नृत्य ही रह जाए।

बुद्ध में यही प्रार्थना नृत्य में पैदा नहीं होगी, शून्य में पैदा होगी। नाचना तो दूर, हिलना-डुलना भी नहीं होगा। बुद्ध तो पत्थर की, संगमरमर की प्रतिमा की भांति थिर—जरा भी नहीं अथिर, बिलकुल थिर बैठे होंगे। उनके भीतर भी वही प्रार्थना खुल रही है, लेकिन मौन, शांत, शून्य, नाचती हुई नहीं। इस प्रार्थना का नाम ध्यान। जब प्रार्थना शून्य होती है, गुनगुनाती नहीं, गीत नहीं गाती, तब ध्यान। और जब ध्यान गुनगुनाता है, गीत गाता है, तब प्रार्थना।

फिर प्रार्थना प्रार्थना में भी भेद होंगे। गाए जाने वाले गीत भी अलग-अलग होंगे। अलग-अलग भाषाएं हैं। अलग-अलग लोग हैं। अलग-अलग लोगों की संवेदनशीलताएं हैं। अगर किसी संगीतज्ञ को प्रार्थना का जन्म होगा, तो वह अपनी वीणा उठा लेगा। और क्या करेगा? छेड़ देगा वीणा को! अगर किसी चित्रकार को प्रार्थना पैदा होगी तो वह क्या करेगा? उठा लेगा अपनी तूलिका, फेंक देगा रंग कैनवस पर, उंडेल देगा रंग। अगर किसी कवि को प्रार्थना पैदा होगी, तो काव्य जन्मेगा। अलग-अलग लोगों की संवेदनशीलताएं हैं। तो उनकी अलग-अलग अभिव्यक्तियां होंगी।

तुम्हारी संवेदनशीलता पर निर्भर होगी तुम्हारी प्रार्थना। इसलिए मै निरंतर कहता हूं, किसी और की प्रार्थना को मत उधार लेना। अन्यथा तुम आत्मघात कर लोगे। किसी दूसरे के अंधे अनुयायी मत बन जाना। सीखो सबसे, लेकिन करो वही जो तुम्हारा प्राण कहे। सुनो सबकी, गुनो सबकी, मगर जीओ वही जो तुम्हारा अंतर-भाव कहे। सद्गुरुओं के पास उठो-बैठो, लेकिन नकलची मत बन जाना। नकलची बनने की आकांक्षा पैदा होती है। क्योंकि नकलची बना बहुत साधारण होता है, सस्ता होता है। अपने प्राणों को जगाना तो जरा महंगा सौदा है। लेकिन किसी और के वस्त्र ओढ़ लेने तो बहुत आसान हैं।

सुनो, समझो, सीखो, सब जगह झुको, मगर एक बात कभी न भूले कि परमात्मा ने तुम्हें एक आत्मा दी है और तुम्हारी आत्मा में कुछ बीज छिपे हैं, उन्हें प्रकट होना है। पता नहीं जुही के हैं, कि चंपा के हैं, कि केवड़े के हैं। जब तक प्रकट न हो जाएंगे तब तक पता हो भी नहीं सकता। उनकी कोई भविष्यवाणी भी नहीं हो सकती, कि तुम नाचोगे, कि तुम गाओगे, कि तुम बिलकुल चुप हो जाओगे। मगर प्रार्थना का प्राण एक है—समर्पण। अस्तित्व के प्रति लीनता का भाव। अस्तित्व से मैं भिन्न नहीं हूं, एक हूं, इसकी प्रतीति। फिर वह प्रतीति तुम जैसे भी प्रकट करो, वैसी ही सुंदर।

पूछते हो तुम : 'प्रार्थना कैसे और कब जन्मती है?'

प्रार्थना जन्मती है, जब तुम्हारा कर्ता का भाव खूब-खूब हार चुका होता है। जब तुम लड़े, जूझे और हर बार हारे। जब तुम धारा के विपरीत तैरे और हर बार टूटे। जब जीवन से लड़-लड़ कर तुम गिर जाते हो टूट कर, तब प्रार्थना जन्मती है। हारे को हरिनाम! हारना बिलकुल जरूरी है।

जीवन एक रहस्य है। जितना जानोगे, उतना गहन होता जाता है। जितना इसमें उतरोगे, उतना अथाह होता जाता है। जितना जानोगे, उतना कम जानोगे। जो पूरा-पूरा जान लेते हैं, वे कहते हैं कि हम कुछ जानते ही नहीं

जो जीत ही रहा है, उसके जीवन में प्रार्थना पैदा नहीं होगी। क्योंकि उसको तो अकड़ पैदा होगी। वह तो कहेगा, मैं कुछ हूं! और जहां मैं है, वहां प्रार्थना नहीं है। टूटे मैं, इसकी कगारें बहती जाएं जीवन की धारा में, यह चट्टान मैं की क्षीण होते-होते रेत हो जाए। जिस दिन तुम अनुभव करोगे कि यह मेरे का भाव ही गलत है, इस मेरे-भाव से ही संघर्ष पैदा होता है, इस मेरे-भाव से ही मैं अस्तित्व से युद्ध में संलग्न हो गया हूं, जब कि अस्तित्व से आलिंगनबद्ध होना है, युद्ध में संलग्न नहीं; अस्तित्व से मैत्री साधनी है, हम अस्तित्व के हैं, अस्तित्व हमारा है; जिस दिन तुम्हें ऐसा अनुभव होगा, जिस दिन ऐसी विवशता, ऐसी मजबूरी तुम अनुभव करोगे कि अलग होना संभव नहीं है, अलग होना भ्रांति है, बस उसी दिन प्रार्थना का जन्म होगा।

मैं चाहता हूं
बालों का पकना रुक जाए।
मैं चाहता हूं—
जवानी का ढलना रुक जाए।
लेकिन!
बाल पकेंगे ही।
जवानी ढलेगी ही।
मैं इसे रोक नहीं सकता
यहीं पर
पराजित हो जाता हूं।

संघर्ष
की प्रवृत्ति अपने आप में
लय हो जाती है।
तर्क का स्थान
प्रार्थना ले लेती है।

जब तुम जीवन को देखोगे, इसकी अनिवार्यता को देखोगे, इसकी अपरिहार्यता को देखोगे, और जब देखोगे कि मेरे किए कुछ भी नहीं होता—मैं गिर जाएगा। और जहां मैं गिरा, वहां प्रार्थना जन्मी।

तो एक तो प्रार्थना का जन्म होता है मैं की पराजय में, मैं की आत्यंतिक पराजय में। धन्यभागी हैं वे जिनका मैं पराजित हो जाता है। अभागे हैं वे जो छोटे-मोटे खिलौनों को जीत लेते हैं और समझते हैं कि जीत गए। किसी ने थोड़ा सा बैंक में धन इकट्ठा कर लिया है, वह अकड़ा फिरता है, उछला फिरता है; उसके पैर जमीन पर नहीं पड़ते। कोई किसी पद पर पहुंच गया है, जरा उसकी अकड़ देखो! दो दिन की अकड़ है। दो दिन भी टिक जाए तो बहुत है। मगर जब पद पर है तब उसकी अकड़ देखो! तब उसके अहंकार को बल मिल रहा है। ऐसे आदमी में प्रार्थना पैदा नहीं होती। कैसे होगी?

धन्यभागी हैं वे जिनके जीवन में इस तरह के खिलौने धोखा नहीं देते। जो जानते हैं कि खिलौने खिलौने हैं, सब पड़े रह जाएंगे। सब ठाठ पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा। उन्हें पता है कि मौत आती है और जल्दी ही कारवां रवाना हो जाएगा। और यहां के पद और यहां का धन और प्रतिष्ठाएं, सब यहीं पड़ी रह जाएंगी। इनको बटोरने में जो मैं समय गंवा रहा हूं वह व्यर्थ ही जा रहा है। जिसे ऐसा दिखाई पड़ जाता है, वह बड़भागी प्रार्थना को उपलब्ध होता है।

और प्रार्थना है रहस्य का अनुभव। प्रार्थना तर्क नहीं है, विचार नहीं है; प्रार्थना भावना है। तर्क के पास उत्तर हैं, प्रश्न हैं, प्रश्नों में से उत्तर निकलते हैं, उत्तरों में से नये प्रश्न निकल आते हैं। तर्क प्रश्न और उत्तरों के बीच में उलझा रहता है। न तो कोई उत्तर अंतिम है, न कोई प्रश्न वस्तुतः सार्थक है। क्योंकि सार्थक प्रश्न वही है जो अंतिम उत्तर ले आए। लेकिन तर्क डोलता रहता है घड़ी के पेंडुलम की तरह उत्तरों और प्रश्नों के बीच में। खुद ही प्रश्न बनाता है, खुद ही उत्तर रचता है। हर उत्तर में नये प्रश्न खोज लेता है। हर प्रश्नों के नये उत्तर बना लेता है। एक पहेली है जो आदमी बैठ कर सुलझाता रहता है। यह कभी सुलझती नहीं। यह कभी सुलझेगी ही नहीं।

प्रार्थना विचार नहीं है। प्रार्थना न तो प्रश्न है और न उत्तर है। प्रार्थना तो प्रश्न और उत्तर का चुप हो जाना है। प्रार्थना अवाक अवस्था है।

प्रार्थना के भी अनंत फूल खिलते हैं। मीरा की प्रार्थना और चैतन्य की प्रार्थना में उतना ही फर्क है जितना चंपा और चमेली में। जीसस की प्रार्थना और मोहम्मद की प्रार्थना में उतना ही अंतर है जितना कमल और गुलाब में। लेकिन फिर भी प्रार्थना का सार तो एक है

विस्मयविमुग्ध! जगत के रहस्य के सामने सिर्फ ठिठका खड़ा रह गया कोई। कुछ सूझा नहीं, सब सूझ-बूझ खो गई। बस वहीं प्रार्थना का जन्म है।

आलोक के इस
विलोपन के बाद
नीले आस्मां में
कुछ छितरे हुए
टुकड़े उभर आए
और इसमें रात भर
भटकने के बाद,
किसको क्या पता
यह
चांद बनजारा
किधर जाए!

नहीं कुछ पता है कि कहां से आए हैं, नहीं कुछ पता है कि कहां जाना है।

किसको क्या पता
यह
चांद बनजारा
किधर जाए!

जो जीवन को उसकी रहस्यमयता में स्वीकार कर लेते हैं। जो कहते हैं कोई उत्तर नहीं है जीवन का और न कोई प्रश्न है। जीवन है, और जीवन एक रहस्य है—समस्या नहीं, एक रहस्य। समस्या के समाधान होते हैं, रहस्य का कोई समाधान नहीं होता। जीवन कोई पहेली नहीं है कि जिसको हल किया जा सके। जीवन एक रहस्य है। जितना जानोगे, उतना गहन होता जाता है। जितना इसमें उतरोगे, उतना अथाह होता जाता है। जितना जानोगे, उतना कम जानोगे। जो पूरा-पूरा जान लेते हैं, वे कहते हैं कि हम कुछ जानते ही नहीं।

उपनिषद कहते हैं : जो कहे मैं जानता हूं, जानना कि नहीं जानता। और जो कहे कि मैं नहीं जानता, जानना कि जानता है।

सुकरात ने कहा है कि मैं एक ही बात जानता हूं कि मैं कुछ भी नहीं जानता हूं।

ऐसी घड़ी में प्रार्थना का जन्म होता है, ऐसे रहस्य की प्रतीति में—जहां सब ज्ञान व्यर्थ हो गया, जहां सारा कर्तृत्व व्यर्थ हो गया, जहां सारी अस्मिता, अहंकार गल गया—हारे को हरिनाम!

– **ओशो**
प्रेम पंथ ऐसो कठिन
दसवां प्रवचन, दूसरा प्रश्न
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)